



श्री भागवत मूषण श्री स्वामी अखण्डानन्द जी
सरस्वती

० जय श्री हरि ०

० भूमिका ०

श्रीमद् भागवत भूषण परमहंस शिरोमणि सर्व तन्त्र स्वतन्त्र श्री श्री स्वामी अखण्डानन्द महाराजनि फरमायो त-
सन्त जो चरित्रु भगुवान जे प्रेम, भाव, लीला, समाज, रस जे लहरियुनि सां ओत प्रोत हुजे ।

वेद शास्त्रनि जो बि सम्मत्तु आहे त-सन्त जे चरित्र में भगुवानु ई भरियलु हुजे । सन्त जी सभु क्रिया भगुवन्त जी सेवा आहे । सन्त जो सभु बोलणु भगुवान जा गुणानुवाद आहिनि ।

असांजे कृपा निधान साहिब मिठिड़नि महर्बान सतिगुर साईं अ जो मधुरु चरित्रु ठीकु उन्हीअ तरहँ पद-पद में प्रभूअ जे प्रेम सां पूतलु आहे । बचपन खां ई साईं साहिब जी रहिणी कहिणी श्रद्धा उत्साह, रस, प्रेम ऐं आनन्द सां परिपूर्णु आहे । पाण बि पहिंजे गीत में फरिमायो अथनि:-

नंढिड़े खां धणी तोखे ध्यायुमि श्रीखण्डि जा सरदार ।

नेढिड़ेई तीव्र वैराग जे प्रवाह ऐं प्रीतम जे मिलण जी उत्कण्ठा में अधीरु थी घरु छदे झंगल झार्गीदे सतिगुरु जी कृपा प्राप्ति करे प्रेम जी परा अवस्था में मगनु थिया । मिलण ऐं विरह जे पूर्ण रूप खे ज़ाणी, मंजिल ते पहुँची बि विरह जी वाट ते वेही वर खे, वौड़णु वधीक प्यारो लगो ।

श्री कबीर साहिब आदि महां पुरुषनि जे सन्त मत्त में-

जीवु पाण खे ईश्वर खां विछुड़ियलु ज़ाणी, विहरणी अबला
वांगुरु पुकारुं करे-निर्गुण ईश्वर जो साक्षात् कारु करे थो ।
पर साहिब मिठिड़नि जो विरह रसु इऐं न आहे, जियें गौरांग
महाप्रभू आदि रसिक महानुभाव प्रभूअ जे सगुण लीला में
परिकर समाज जे वियोग व्यथा जी गहिराइप में तन्मय थी,
विरह जे जागरण, चिन्ता, व्याधि, प्रलाप, उन्माद आदि
अवस्थाउनि जे लहरियुनि में . बुदन्दा तरन्दा रहनि था ।
जहिंखे रागआत्मका भक्ति चवनि था । साहिब मिठनि जो सनेहु
तियें आहे । सदाई श्री सिय स्वामिनि जे विरह व्याकुलता
जे क्यास में . बुदा पिया हुजूं इऐं चाहींनि था ।

श्री वैकुण्ठेश्वर वासभवन ग्रन्थ में श्रीस्वामिनि महाराणी
खे चवनि था--

आउ माउ सची शील सिन्धु अत्यं ।

जया जाउँ तथां ते रहौं संगि नित्यं ॥

साकेत स्वामिनि श्री वेदपती सत्यं ।

विहरणी अमां विरह श्रीखण्डि दित्यं ॥

हे विहरणी अमां ! तवहां पहिंजे विरह जो दुखु माखे दियो ।

श्री ब्रज स्वामिनि खे भी विनय करे चवनि था--

रस भरी श्री राधा क्यास जी सिद्धि दे,

गरीबि श्रीखण्डि तो संदी ।

श्री महा लक्ष्मी जी स्तुति में बि इऐं प्रार्थना था कनि-

हे माते वरी महालक्ष्मी ! अनन्त कोटि पद्म कल्प
तलकि श्री वैदेहीदेवीअ जी विरह भरी वणिकार मां
बालिड़ी गरीबि श्रीखण्डीअ जे मस्तक ते प्रकां शत
करियो । मुहिंजे मन, प्राण, आत्मा, रोम-रोम में
विरहणी अमां, श्रीमिथिलेश नन्दिनी जे विरह दुख जो
गहिरो क्यासु भरियो ।

इन्हीअ क्यास जे पूर में सभ कहिं खां मिठी स्वामिनि
महाराणीअ लाइ आशीष जा वचन चवाईनि था ।

श्री वृन्दावनेश्वरी स्वामिनि बि आशीश देई चवनि था-
जुग जुग जीओ श्री जानकी अदी ।
राजु करियो रसनिधि राघव सां अचलु चैक छटु गदी ॥

श्री जुगल सरकार जइहिं व्याहु करे घरड़े में अचनि था
त-अमिड़ कौशल्य राणी श्रीजू बचिड़ीअ खे श्री गुरुपतिनी
श्री अरुन्धतीदेवीअ जे चरणनि में प्रणामु कराईनि था । जहिं
ते गद् गद् कण्ठ सां श्रीजू जे मस्तक ते कृपा वात्सल्य
भरिया हथड़ा रखी अरुन्धती देवी चवे थी-पुटिड़ी पार्थिवी !

पेवकड़े घर लादु.ली तूं, साहुड़े सुखि वसु ।
बिन्हीं कुलनि जो बालिड़ी तूं, कंदीअ उज्वलु जसु ॥

प्रीतम जा सुख पसु, सदां सुहागिणि जानकी ॥

बन देवियुनि खां बि चवाईनि था--

अमृत जल भरी बावली, मिठी स्वामिनि करे सनान ।

रक्षा करे हरि गुरु सदा, श्री मैथिलि तन मन प्राण ॥

श्री भरतलालु भी उमंग में गद्गद् थी चवे थो--

अमड़ि मूं खे बुखिड़ी आ द्राढी लगी ।

प्रेम पुलाउ खाराइ मैथिलिराणी, भरत जी स्वामिनि सगी ॥

आशीशूं दियाइं शल उमिरि वधेई,

वेड़िहां वसेई श्रीवैदियलि वगी ।

जुगांतकि जीवें शालां वधि थीवें,

तुहिंजी जोतिड़ी जुगि जुगि जगी ॥

अमड़ि कौशल्या महाराणी बि प्रेम उन्माद में बचिड़ी

वैदेहीअ जे बनवास जी सुरिति करे, शोक में अधीरु थी

आशीश थी दिये ।

उमा रमा शची सावित्री, सरस्वती सत बालड़ी ।

नैनपुतरी इंच विरहिणी वैदेही की करनि सदां रखवालड़ी॥

श्री सुमित्रा अमड़ि बि श्रीजू खे संभारे व्याकुलु हृदय

सां आशीशूं थी उचारे --

सिधो आउ श्रीजू सुमित्रा थी सम्भारे ।

अवलीअ मां सवली कन्दुइ, श्री रंग नाथु सवारे ॥

सुखिड़ा सतिगुरु झोल दिगैई, सभु कष्टिड़ा टारे ।

कोसो वाउ न लगंदुइ, हुजनी बसन्त बहारे ।

अँमृत वाणी वैदियलि ब्रचिड़ी, अची अडणि बहारे ॥

साहिब मिठिइनि जे क्यास जी इहा पराकाष्ठा आहे !

जो ब्रियनि खां त आशीशूं चवाईनि था पर प्रीतम श्रीरामचन्द्र
खां बि आशीश जा बोलड़ा बोलाईनि था--

मांदी न थीउ मिठी मैथिलि राणी ।

सतिगुरु तोसां सदां थींदो सांणी ॥

सुखी कन्दो तोखे शंकरु भवानी ।

गुरु परमेश्वरु दिगैई सुख मणी ॥

श्री साकेत स्वामिनि जी स्वर्ण प्रतिमा जे समीपि वेही,
प्रेम आवेश मे अधीरु थी । भोजन जी थाल्ही भरिसां रखी,
रोई रोई श्री रघुनन्दनु प्यारो चवे थो--

सदां हर्षिति थीउ हांणे, वैदेही रस रंग मार्ण ।

सिय देवी कीरति तुहिंजी सरि सदाई,

पार्थिवि दिसंदीअ पाणिहे ॥

दुखनि में बि हर्षिति बुखनि में मृदु मुस्काणे ।

कोसो थथो वाउ न लगंदुइ, सदा बसन्तु तुहिंजे भाणे ॥

सनेह निधान साईं मिठिड़ा पाण बि नितु अँमृत वेले
शान्ति वातावरण में कोकिल कूँजित कण्ठ सां श्रीजू जे क्यास
में आंसू वहाईदे हीउ मधुर गीतु गाईनि था ॥

श्री मैथिलि अकेली नवेली अलबेली श्रीराम सो सतिगुर मेली ।
मिली श्री राधिका मनमोहन सौं, शिवजी सो गिरिजा शैली ।
कमलाजूं को कू वैकुण्ठेश्वर राम की सीय प्रिया अलबेली ॥
राज महिषी अ योध्या नगर की त्रिहुत की जन्मेली ।
फूलों की डाली हाथ में सोहे, महर्षि रामु सीय चेली ॥
जिसे सदा सिंघ स्वामिनी, चन्द्रवदन चमकेली ।
सतिगुर वेदवती बायू बसन्त लागे,

सदिके गरीबि श्रीखण्डि नवेली ॥

साहिब मिठनि जे सफल आशीष सां । अश्वमेघ यज्ञ जे
समय जदहिं लवकुश कुमारनिजी जय जीत थी ऐं युगल सरकार
आनन्द सां पहिजे राजमहल दे हलण लगा । उन महल श्रीजू
महाराणी आश्रम वासिणियुनि देवियुनि खां कृपा आशीश घुरी,
विदाई वइनि-तइहिं प्रेम में गद् गद् थी । बुढिड़ियूं तपस्वन्यूं
ऐं मुनि कुमारियूं आशीश देई चवनि थियूं ।

श्रीजू : अब तो बहिन् ! विदाई कै हौं ।
तपस्वनी :- बूढ सुहागिनि सदहीं रहि हौं ॥

मुनि कुमारी :- जुग जुग जीवो श्रीजानकी मैया ।

विलसहुं शीया सदां सुख दैया ॥

श्रीजू :- वसन वियोग अँसुनि सो भीजो ।

अदी ! वेदेही विसारि न दीजो ॥

मुनि कुमारी :- प्राणनाथ संग सुखि वसु स्वामिनि ।

देहुँ आ तीष सदां वर भामिनि ॥

सखी कोकिल :- अस अभिलाष सदा रहे साई ।

सिय स्वामिनि मैं सेवकि सदाई ॥

विरद भरी वैदेहलि माइ ।

श्री खण्डि दासी दुत वधाइ ॥

कृपा निधान साहिब मिठिइनि जे हृदय ते श्रीजू महाराणी
जे पोए बन वा सजी अहिड़ी गहिरी चोट आयल आहे जो
जुगल जे राज सुख विवाह सुख आदि लीलां जे आनन्द में बि
हर हर उहा लहरि अची साहिबनि जे कोमल हृदय खे झक
झोर थी करे जहिं करे राति दीहँ उन दर्द जे गहिरे घाव करे
रुअनि था ! तड़फनि था, श्री रघुनाथ खे दोरापा दियनि था,
देवनि खे मनाईनि था, गरीबनि खे दान देई आशीशूँ वठनि
था, सन्तनि जी सेवा कनि था, पाठ पूजाऊँ कराईनि था, मंत्र
पढ़नि था । रुगो हिकिड़ी इहा तार अथनि त मिठी स्वामिनि
महाराणी पहिंजे सुहाग सां सुखी रहे, मिली रहे । विछोड़े ऐं
विरह जो दीहँ वेझो न अचेंनि ।

खाइण पीअण पहिरण जी, रही सुरिति न काई,
हिक तार लगातर कीअँ मिटे जुगल जुदाई ।

तोड़े श्री जानकी रामचन्द्र जी ईश्वरता हैं परस्पर
सनेह खे बि पूर्ण रीति ज़ाणिनि था-जीएँ श्री कोकिलि कलरव
ग्रन्थ में चवनि था ।

सत्य व्रत, सत्य पद और श्री सत्य, आदि सत्य,
मध्य सत्य, सत्य का सत्य श्रीपार्थिवी है और श्रीरामचन्द्र
भी सत्य सत्य है । मैं उन सत्य आत्मक की शर्ण हूँ ।
गुण से रूप और रूप से गुण की शोभा बढ़ती है।
परन्तु प्रीति की शोभा तो प्रीति से ही बनती है । श्री
राघव के हृदय में श्री जनक नन्दिनी का और श्री जनक
नन्दिनी के हृदय में श्री राघव का प्रेम दिन दूना रात
चौगुना बढ़ता ही रहता है ।

परम उदार श्री रामचन्द्र का मन श्री प्रिया जी में
हीं रहता है, उन्होंने अपना हृदय ही समर्पित कर दिया
है । श्री जानकी देवी सती िरोमणि है उनका और श्री
रामचन्द्र का गंभीर प्रेम अखण्ड है । जुगल का मन प्राण
आत्मा सब एक हैं, अभिन्न हैं । केवल नाम और रूप
ही भिन्न-भिन्न दिखाई देते हैं ।

तदहैं बि घणे अनुराग करे जुगल जी माधुर्य लीला जे
लहरि में वही, भोरे भाव में भरिजी चवनि था-

स्वामिनि सुखड़ा माणी शल वसनी मेंघ मल्हारे ।
जिन्दुड़ी जद्रीअ जी निकिरे तुहिंजो सुखड़ो सारे ॥
तिलु तिलु करे तन खे श्री वैदियलि व' वारे ।
रोग बलाऊँ दुखड़ा पहिंजा मूखे भोगारें ॥
वेही वणिकारियुनि में कोकिल पई पुकारे ।
ब्रान्हीं वैदयलि वीर जी गरीबिश्चीखण्डि बलहारे ॥

तुहिंजो सुखु चाहियां नीहड़ो निभायां,

दांणु द्रींदुमि द्रातरु । शल रहिजी अचेई ०

ब्रनि पवनि संसार सुख ब्रह्म सुख,

जुड़ियो जुगल सरकार ॥ शल रहिजी अचेई ०

प्यारे प्रभू श्री रघुनाथ जे प्रार्थना जे पद में बि मिठी
स्वामिनि महाराणी जे सदा प्रसन्न रहण जी याचनी करनि था-

सदा प्रसन्न वदन देखूं सतिगुरु सुहागिनी सीया,

जीऊँ स्वामिनि सहारे से वारुं तनु कर नमकु राई ।

वही सुरती गती वो ही मती और रति वही दीजे,

वही सेवा वही भक्ती रहे प्रसन्न जनक ज़ाई ।

श्री कोकिल कलरव ग्रन्थ में बि साहिब मिठा पहिजे हृदय
जे भाव खे हिन रूप सां कथनु करनि था--

भूतल में रहें या थल में, कण्ठ में हार हो या तीक्ष्ण
धार कृठार, चरणों में प्रेम बना रहे । स्वर्ग हो, नरक हो या
अपवर्ग हो, मैं सद्गुरु कृपा से यही चिरदान चाहतीहूँ कि- मैं
नि चिन्त रूप से आपका सुपसन्न सुन्दर
मुखारविन्द देखती रहूँ ।

इऐं भाव जे प्रवाह में वरिहनि जा वरिह वहँदे साहिब
मिठनि जी उत्कण्ठा ऐं अनुरागु सुमेर शिखर वांगे ऊचो ऐं
अलोकिक थियो । जहिं में विचित्र विचित्र लालसाऊँ,
भावनाऊँ, सेवा जा उमंग ऐं दर्द जूं पुकारुं आहिनि ।

कद्रहिं माता भाव सां श्रीजू जे क्यास में व्याकुलु थी
चवनि था ।

कहां होगी बेटी ! भूखी प्यासी,

कौमल कम्पित गातरो ।

शची सावित्री पार्वती श्रीराधा,

लक्ष्मी नारायणु शि श भास्करो ॥

नैन पुतरी इवँ बची वैदेही की,

रक्षा करहिं नि १ वासरो १

गंगा किनारे सिय स्वामिनि विराजे,

गरीबि श्रीखण्डि अचो आसरो १

कदहिं सेविका भाव में मगनु थी हींअ चाहीनि था—

श्री वैदियलि वाहगुरुअ जी गोली थी गुजारींदसि,

खाराए पकोड़ा पार्थिवचन्द्र खे पाणी प्यारींदसि,

मेड़ींदसि अडणु मैथिलि जो देई पिंबिड़ियुनि .बुहारी १

कहिं महल स्वामिनि जी ऊँची महिमा विचारे उमंग में
चवनि था --

सिक भरी सांड़ण जी, कनि सामादिक वाख्राणि १

वंदियां वेदवती गुरु, रमादिक सुलतानि ॥

श्रीखण्डि दासी दर जी, जेतारि जग जहान १

शाल थिया कुलबान, श्री मैथिलि महरिवानिं तां ॥

श्री कोकिल कलरव ग्रन्थ में, श्रीजू महाराजनि खे बन में
गुलनि पटण लाइ परे वेदो दिसी सखी रूप में हित भरी वाणी
सां चवनि था --

सखी कोकिल :- सखी जानकी ! स्वामिनी !! सामने हीं

पुष्प दीख रहे हैं । आप दूसरी ओर
दृष्टि कर क्यों जा रही हैं ?

श्री प्रिया जू :-सखी कोकिल ! यहां से आगे सामने

विपिनमें और भी अधिक पुष्प खिल रहे हैं ।इस
अभिलाषा से जा रही हूँ ।

सखी कोकिल :- सखी श्री जानकी ! अब य ही यह हम
लोगों के लिये अपरिचित प्रदे । है । बनों
में शापानुग्रह समर्थ रिषिगण रहते है इस-
लिये चाहे जिस किसी आश्रम से कोई भी
रुष्ट हो सकता है । भगवान श्री राम भी
दूर है इसलिये आवो यहां से ही पुष्प
लेकर लौट चर्ले ।

विशेष करे दिसिजे थो त-नंढपण खां ई माता जे प्यार
न मिलण करे जगदम्बा अम्बा श्री जनकनन्दिनी खे ई पहिंजी
माता रूप में मंजियो अथनि । संदनि बचपत्र जा ब गीत प्राप्ति
आहिनि । जहिं में मिठी अमड़ि जनक नन्दिनीअ सां हालड़ो
था ओरीनि ।

माता मां निमाणी अमां मां अयांणी,

शर्ण पवां थी, शर्ण पवां थी, शर्ण पवां थी ।

सती सत्याणी तूं ई शील मणि राणी,

मां आहियां अयाणी तूं सभु थी ज़ाणी,

तुहिंजे अगियां मैया

पल पल निभां थी, पल पल निमां थी, पल पल निमां थी ॥

श्री राम प्राण प्यारी तूं श्री जानकी राणी,

मता सिया तूं जग जी ध्याणी ।

मुखु सां चवां थी, मुख सां चवां थी,

कुछु न चवां थी, कुछु न चवां थी ॥

तूं सत्य जगत आधारू प्यारी माउ है है हालु मां ।

श्री जनक तनया जानकी देवी अडणि ईदउ अमां ॥

वेही इन्हीअ वणकार में अमी लडैतीअ शल वणां ।

नवल नौतनु अमड़ि बाला आह शाला में रड़ां ॥

सोन्दर्यनिधि श्री सिय अमी, श्रुतीअ चयो नहिं तो सभी,

मां ब्रालिड़ी ब्रलहीनि सूरनि में थी श्रीखण्डिड़ी सड़ां ।

श्री कोकिल कलरव जे आदि में सतिगुर रूप सां श्री
मिथिलेश नन्दिनी स्वामिनि जी वंदना करनि था ।

जिनका रोम-रोम सामवेद आदि वेद वाणियों

का गान करता रहता है और जो आप स्वयं रमा आदि

देवियों को उपदे । करती रहती है । उन श्री गुरुदेव
सरूप श्री वेदवती महाराणी (श्री जनक नन्दिनी) के
चरण कमलों की वन्दना हो ।

श्रीजू महाराणी खे आशीश दीदे चवनि था-

जिये सदां सिध स्वामिति चन्द्र वदन चमकेली ।

सतिगुर वेदवती वायू बसन्त लागे,

सदिके गरीबि श्री खण्डि नवेली ॥

श्री युगल सरकार जे सनेह में सराबोर थी, साईं साहिब
विचित्र-विचित्र अभिलाषूं कयूं आहिनि । जहिं में कीअं
पहिंजे अस्तत्व खे मिटाए, नयें-नयें रस रंग जी लालसा में
तन्मय था थियनि --

सखू तट पर वृक्षावली में स्थिति होकर दिन रात
सदैव यह अनुभव किया करूं कि आपके पद पंकज पुट
नूपर के पिंजरे में स्थिति हूं । यही कोकिल का मति
विलास है । (श्री कोकिल कलरव ग्रन्थ से)

श्री जनक नन्दिनी के पद पंकज में अर्पित सुमनों
की सुगंधि को वायू लेकर जेहिं दि । को जाय है,
हे सखी ! मैं भ्रमरी होकर रस सुगन्धि को झटत फिरूं
प्रेम गुण गावत मैथिलि कु ल मनावत फिरूं ।

श्री वाहगुरु के द्वार पर ऐसे चाहत हूं । महांवर
युक्ति लाल चरणों को सखी जन धो क स्वह जल जेहिं
तौर पर डारत है । वहां की पृथ्वी पर पंक बनकर सदां
ठण्डी होऊँ ।

(श्री वैकुण्ठेश्वा वास भवन ग्रन्थ से)

विनय जे पद में भी चवनि था-

कहिड़ो कयांड़ हालड़ो मां मूर्खि अयाणी ।
गुर नानक शाह मुहिंजी वाह पटि, कू द्रेखाइ ब्रान्हीं ॥
श्री मैथिलि अमड़ि जे दर ते, शल थी पवां पाणी ।
पिये अमड़ि मिठी पार्थिवी, मां वजां कुलबाणी ॥

अहिड़ीअ रीति नवनि-नवनि भावनि सां लीला अनुसार
नवां नवां रूप धारे पहिंजे इष्टदेव खे सेवा हैं सुहृदता सां सुखी
करण जा यतन करनि था ।

जियें लखणु आ राम अनुरागी, तियें स्वामिनि पद तूं आं पागी,
करीं सेवा साहिब जी सहाई ।

जुगल जे मिलण लाइ सदां करी सुखाऊँ,
वठी वण वलियुनि खां दम-दम दुआऊँ ।
सवें रूप धारियइ सेवा में सचारा ॥ (सुजसपदावली)

जियें श्री गोस्वामि तुलसीदास विनय पत्रिका में प्रभू
महाराजनि जे चरणनि में निवेदनु कयो आहे-

तेरे मेरे नाते अनेक मानिये जो भावे ।

तियें कृपा निधान साहिब मिठिड़नि जा बि पहिंजे प्राण
प्यारे इष्टदेव सां अनन्त नाता आहिनि । जहिं करे संदनि गहिरे
स्नेह बे अन्त अनुराग जो कहिं खे बि पतो नथो पवे ।

इन्हनि भावनि जो “ श्री साई साहिब लीला माधुरी ”
ग्रन्थ में विशेष रूप सां विस्तारु थियलु आहे ।

साहिब मिठा सदां भाव जे राज में ई रहिन था ।
उथणु विहणु, हलणु चलणु, घुमणु फिरणु, खिलणु
गाल्हाइणु, सभु रस मयी, भाव मयी आहे ।

तुहिंजो सहजि घुमणु बि परिक्रमा प्यारी,
तुहिंजो खिलणु बोलणु भी भगति उज्यारी ।
सभु कार्य सेवा प्रभु तुहिंजी मित भाषी ॥

हरी हैं हर्ष खां सवाई ब्री वार्ता साई साहिब
दरिबारि में न आहे ।

प्रसन्न वदनु आ साई हरीअ खे बि हरषु दिये ।
पाण प्रभूअ खे बि प्यारो दिलबर दीदारु आ ॥

(सुजस पदावली)

एकान्ति नेम खां सवाई समूरो समयु साहिब मिठनि जे

अङ्गण में सदां सत्संग जी सरिता वहंदी रहे थी, तोड़े पहिंजे
अन्तर आनन्द में बि परिपूर्ण सुख खे प्राप्ति आहिनि पर तदहिं
सत्संग आनन्द खे घणे खां घणो चाहींनि था । उन जी
गहिरी प्यास अथनि । जियें श्री गौस्वामि बि चवे थो-

जीवन मुक्ति ब्रह्म पर चरित सुनहि तज ध्यान ।

इन्हींअ करे पहिंजी विनय वाणी में, सतिगुर परमेश्वर
खां सदां सर्वदा सत्संग मिलण जी घुर कई अथनि--

मैगसि की रक्षा करो, श्री के तव त्रिभुवन राइ ।

दिवस राति सत्संग में, मैगसि सुखी वसाइ ॥

अमड़ि मैथिलि की ममता में

ये मन तन प्राण घुल मिल जाइ ।

पद्म कल्पों तलक सत्संग वसूं

हर दमु मैं हुलसाई ॥

घणों करे दिठो वियो आहे त- प्रेम पथ जा पथिक धर्म
कर्म, मर्यादा, आचार विचार जी परिवाह न कंदा आहिनि, पर
साहिब मिठिड़नि जी रहिणी कहिणीअ में इहा विचित्रता आहे
जो ऐदे प्रेम जे ऊचे पद खे प्राप्ति थिए खां प्गइ बि सदाचार ऐं
मर्यादा जो कदहिं बि उलंघनु न कयाऊँ । साईं सुजस
पदावली में बि इऐं वर्णनु आहे ।

गुणनिधि-छबिनिधि-रसनिधि-साहिब

शील सनेह निधि-सुखनिधि-साहिब ।

निविड़त निधि-सिंग सेवकि सदाई ॥

समुंड जूं लहिरियूं नभ जा तारा बादल बूँदू बणिजनि ।
पर सतिगुर साहिब साईं मिठल जा, गुनिड़ा गुणे न सधिजनि ॥
(सुजस पदावली)

साईं साहिब जे हिन प्रेम मयी मधुर चरित्र में ऊचे
अनुराग प्रभूअ जे मधुर लीला चरित्रनि अद्भुत शिक्षाउनि
ऐं रस सिद्धान्त सां गढु दिव्य गुणनि जो बि जिते किये
दर्शनु थिये थो । जो सोन में सुगन्धि जे समान आहे ॥

वेद जी श्रुति चवे थी त-हीउ सन्सारु विहु जो वृक्ष
आहे । उनमें बि दुर्लभु अमरु फल आहिनि । प्रभु प्रेमु ऐं सत्संगु ।
मनुष्य जन्म जी इहाई सफलता ऐं सार्थकता आहे जा इन्हनि
बिन्हीं फलनि खे प्राप्त करे, पर सचनि सन्तनि जो इहो
फरमानु आहे त रसिक महापुरुषनि जे संगति खां सवाइ प्रेम
जी प्राप्ति न थीदी ।

रे मन रसिकनि संग बिनु रंच न उपजे प्रेम ।

(श्री ध्रुवदास)

ऐं ईश्वर जी अनन्तकृपा खां सवाइ सन्तनि जो मिलणु न थीदो ।

“ बिन हरि कृपा मिलहिं नहिं सन्ता ”

(श्री गोस्वामि)

हाणे सुवाल् इहो आहे त ईश्वर जी कृपा कीअँ प्राप्ति
थिये ? उन जो कहिड़ो साधनु आहे ? ईश्वर कहिड़ीअ
गाल्हि ते प्रसन्न थीदो ?

इन लाइ परम उदार प्रभू श्री रघुनन्दन देव जू कृपा कर
पहिंजी कृपा जे प्राप्तिअ जो पाण ही उपाउ दसिनि था त-
जिनि श्रद्धावन्त जीवनि जी मुहिंजे रसिक प्रेमी सन्तनि जे
चरणारविन्दनि में पावनु प्रीति आहे, मां उन्हनि ई सनेहियुनि जे
सर्वदा आधीनि थो रहां ।

सन्त चरण पंकज रति जांके । तात निरन्तर वस मैं तांके ॥
(श्री राम चरित मानस)

सन्तनि जे चरणनि में प्रीति, उन्हनि जे चरित्रनि जे
पड़हण . बुधण ऐं मनन करण सां थींदी ।

प्राण प्यारे प्रभू श्री राघवेन्द्र खे पहिंजे सुजस खां बि
पहिंजे प्यारनि सन्तनि जो गुण गान मिठो आहे ।

श्री अवध जी राज सभा में प्रभूअ जे स्वरूप ऐं तत्व जो
जहिं महल रिषी मुनी निरूपणु कन्दा हुआ त-श्री रघुनाथ जूँ
सकुचाइजी . बुधी अण . बुधी करे छर्दीदा हुआ, पर जहिं महल
देवी शबरी, महाभाग्य निषादराज, पुनीत जस वारे जटायूअ जो
प्रसंगु कथनु थींदो हो त-भगत भावनु भगवानु प्रेम में द्रविति थी
गद् गद् कण्ठ सां चवंदा हुआ त- वरी-वरी गायो । उन्हनि
स्नेहियुनि सां सम्बन्ध वारो नामु ई प्रभू खे वणे था ।

सहज सरूप कथा मुनि वर्णत रहत सकुचि सिर नाई ।
केवट मीत कहे सुख मानत, बानर बन्धु बड़ाई ॥

० ० ० ० ०

निज करुणा करतूति भक्त पर चपत चलत चरिचाउ ।
सकृत प्रणाम प्रणत जस वर्णत, सुनत कहत फिर गाउ ॥
(विनय पत्रिका)

जहिं महल प्रेमी भक्त प्रभूअ जा गुण गानु कनि था, उन्हीअ
महल प्रभू ! दोरि अधीन गुदीअ वांगुरु छिकिजी थो अचे ।
सो पहिंजी साराह . बुधण लाइ न, पर प्रेमियुनि जे हृदय जे
नवनि-ननि तरंगनि ऐं भाव भरी वाणी ऐं प्रेम आंसुनि सां
भिनल मुखड़े जे दर्शन करण लाइ अचे थो ।

इन्हीअ मां इऐं जाहिरु थियो त-जियें सन्तनि खे प्रभूअ
जो सुजसु प्यारो आ, तियें भगवान खे सन्तनि जी कथा ऐं
महिमा मिठी आहे ।

श्री वृन्दाबन धाम जे हिक मन्दिर में श्री ठाकुर जी महाराज
जे समीप सन्त पाण में मिली रोजु श्री भक्तमाल जी कथा कन्दा
हुआ । हिक भेरे मन्दिर में चोरी थी, जहिं में चोर गृहिणनि
जे लोभ ते श्री ठाकुर जी खे पाा सां वठी विया ।
व्याकुलता में सन्तनि कथा कान कई । टियें दींहु जदहिं
श्री ठाकुर जी मन्दिर में विराजमानु थियो, तदहिं वरी कथा
आरम्भु कयाऊँ । कथा करण वारे सन्त श्रोतनि खां पुछियो त

कथा काथे रखियल हुई ? कहिं बि श्रोते जे न .बुधाइण ते जहिं
भक्त जी कथा हलन्दइ हुई सा पाण मधुर वाणीअ सां श्री ठाकुर
जी महाराज .बुधई ।

० ० ० ० ०

श्री जीव गोस्वामी जी कुटिया जे पुठियां वेही ग्वाल रूप
में भगवानु नित्य नेम सां कथा .बुधन्दो हो । कदहिं जीव गोस्वामि
जे देकर करण ते प्रभू आतुरु थी पुछे त-कथा वारो बाबा
किथे आहे ? केद्री महल कथा थींदी ? । अहिड़ी आहे भगवान खे
भक्तनि जे कथा .बुधण जी प्यास ।

हाणे बि श्री अयोध्या में श्री कनकभवन महल जे शयन
कुंज में श्री भक्तमाल विराजमानु आहे, इन्हीअ भाव सां त-
जुगलधणी रोजु भक्तनि जे सुजस जी ओर था ओरीनि ।

भगवानु श्रीकृष्णचन्दु बि श्री मद् भागवत में सन्तनि जी
महिमा में चवे थो त-

देवता बान्धवाः सन्तः सन्त आत्माहमेव च ॥

सन्त ई मुहिंजा देवता ऐं बंधू बांध आहिनि, संत ई
मुहिंजी आत्मा, सचु पचु संत ई मुहिंजो सरूपु आहिनि ।

अहिड़नि ई प्रभूअ जे प्यारनि सन्तनि, महां पुरुषनि
जे अनूपम दिव्य गुणनि, रसीली रहति ऐं अद्भुत अनुराग
सां सर्वांग सींगारियलु आहे, असां जो प्राण प्यारो जीवन
सर्वंसु भावग्राही रसिक शिरोमणि साईं साहिबु ।

साईं साहिब पहिंजे अनूपम प्रेम सौंदर्य सां नितु जुगल
सरकार जे हृदय खे अहिलादिति करे श्री प्रिया प्रीतम जा घणे
खां घणा प्यारा ऐं दुलारा थिया ।

तहिं सां गदु अदब ऐं आशीष जी सरलु सरसु सुगमु
ऐं ऊची साधना सेखारे जग जीवनि सां परम उपकार
कया आहिनि ।

वेद पुराण सभेई शोषे रस राह तवहां लधी,
अहिड़ी न अगु दिठी हुई सुगमु ऐं सिधी ।
सभु सन्तनि भी साराही जेका गाल्हि तवहां गणी ॥
(सुजस पदावली)

श्री साकेत जी श्री कोकिल सहचरी सन्त रूप में प्रगटु
थी जेके प्रेम रस पूर्ण वर्ताव सां अलोकिक चरित्र कया आहिनि
ऐं समय-समय ते पहिंजे दासनि खे शुभ शिक्षाऊँ देई
प्यारे ईश्वर जे सचीअ राह जो राही बणाऐं प्रभू में पहिंजे
पणे जो सबकु सेखायो आहे । उन्हनि रस कथाउनि सां ई
हीउ “साईं साहिब लीला माधुरी” पुस्तकु भरियलु आहे ।

हिन पुस्तक खे सुकी सियाणप विसारे भोरी भारी श्रद्धा
ऐं प्रेम भाव सां पड़हण करे असुली आनन्दु प्राप्ति थींदो ।

श्री ज्ञानेश्वरी गीता में कथनु आहे त-

जिये समुद्र में सनानु करण सां सभु तीर्थनि जे सनान जो

फलु प्राप्ति थिये थो । जियें अम्बृत जे पियण सां सभिनी
पदार्थनि जो स्वादु मिली थो वजें, तियें सन्त चरित्र मां सभेई
रस प्राप्ति थियनि था ।

परम कृपाल साईं साहिब मिठिड़नि जो अनुभवु आनन्द
सागरु अथाहु ऐं अनन्त आहे । जहिं मां प्रभूअ जी प्रार्थना
महिमा, चरित्र ऐं रस सिद्धान्त जा अने अमूल्य रतन निकतल
आहिनि, जे समय-समय ते पाण मिठिड़े बाबल साईंअ
एकान्ति में पहिंजे श्री श्री कर कमलनि सां लिखिया आहिनि ।
उन्हनि मंझा कुछु भाव पूर्ण अनुराग आशीष संयुक्ति पद हिन
भूमिका में ऐं कुछु प्रभु महिमा, सिद्धान्त जा वचन ग्रन्थ जे
आदि-आदि में रखिया आहिनि, से नेह निधान साईं मिठनि
जे भाव भण्डार जो हिकु कुणिको आहिनि । सनेह सागर जी
हिक बूंद ऐं रस रतननि जी हिक प्यारी झाँकी आहे । उहे ज़णु
हिन पुस्तक रूपु सोनी माला में सचनि हीरनि जे समान
जड़ियल आहिनि ।

वचननि जे रतननि सां भावक सभु भरिया ।

छा कुर्बान करियां, ढोल ढरिया जेहिं वेल में ॥

वास्तव में साईं साहिब जे विनय ऐं चरित्रनि जी
वाणीअ जा भाव ई हिन “लीला माधुरीअ” जो बिजु
आहिनि । जहिं मंझां हीउ ग्रन्थ-रूपु कल्प वृक्षु फलियो
फूलियो आहे ।

साहिब मिठिड़नि जी महिमा हिन वृक्ष जो थुड्डु
 आहे । दिव्य गुण वड़ा टार आहिनि । तीर्थ रटनु ऐं सन्त
 मिलणु वृक्ष जूं टारियूं आहिनि । सिद्धान्तु ऐं शिक्षाऊं पत्र
 आहिनि, प्रभूअ कथा जा प्रसंग रंग बिरंगी पुष्प आहिनि ।
 विरहु ऐं जुगल विहारु फल आहिनि । चरित्र में जो माधुर्यता
 जो वर्णनु आ, सो उन्हनि फलनि जो रसु आहे ।

सात्वक श्रद्धा ऐं सच्ची लगनि वारा सनेही तोतनि
 ऐं मैनांउनि रूपु थी, उन रस जो आस्वादनु करनि था ।

भगुवन्त ऐं सतिगुर जी अहेतुकी कृपालता हिन ग्रन्थ
 रूपु कल्प वृक्ष जी मधुर छाया आहे । जिते सर्वदा हरि रस जी
 मिठी हीर लगंदी रहे थी । सन्सार जे ताप में तता हुआ थका
 मांदा पांघेडू जहिं छाया में वेही पहिंजो थकु मिटाए सुखी
 थियनि था ।

श्री साईं साहिब दासनि दासु--

गेही

० बोल मिठिड़े बाबल साईं जी जै०

श्री वृन्दावन धाम

श्री सुखनिवास

हरियाली तीज

वि०सं०२०१६